# गोआ में भाजपा की विजय और मध्यप्रदेश के वटवृक्ष

ग्रीष्म ऋतु से झुलसी प्रकृति पर जैसे ही वर्षा की पहली फुहार पड़ती है, मोर नाचने लगता है। कुछ उसी प्रकार लगातार पराजय के थपेड़े सहती भाजपा गोआ में विजयी होने पर खुशी से झूमने लगी है। मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं को सपने भी दिखने लगे हैं। उन्हें आगामी चुनावों के बाद मिलने वाली लाल बत्ती से सजी गाड़ियों के सायरन सुनाई देने लगे हैं। इस स्वप्नलोक में विचरण करते भाजपा नेता गोआ विधानसभा चुनावों के बारे में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य को नजरअंदाज कर रहे हैं।

गोआ में भाजपा ने मनोहर पर्रीकर के नेतृत्व में चुनाव लड़ा। भाजपा की ओर से चुनाव का एकमात्र मुद्दा 'गुड गवर्नेन्स' अर्थात सुशासन का था। गुजरात की घटनाओं के बाद यह संभावना व्यक्त की जा रही थी कि अल्पसंख्यक भाजपा से दूर हो जायेंगें। गोआ में लगभग २६ प्रतिशत मतदाता ईसाई धर्मावलंबी हैं। चर्च के पुरजोर के विरोध के बावजूद जनता ने पर्रीकर के सुशासन के वायदे को विश्वसनीय माना और समर्थन दिया। इस विश्वास मत के पीछे मनोहर पर्रीकर के व्यक्तित्व, प्रतिभा तथा शैक्षणिक योग्यता का हाथ रहा। पार्रीकर आई० आई० टी० मुंबई से स्नातक हैं। उनकी विद्वता तथा प्रशासनिक क्षमता का लोहा उनके विरोधी भी मानते हैं। लगभग चालीस वर्ष की आयु में मुख्यमंत्री प्राप्त करने वाले वे भाजपा के इतिहास में अभूतपूर्व हैं। अपनी पार्टी के विरोध के बावजूद, जिस दमदारी से उन्होंने विधानसभा भंग करने की तथा मध्यावधि चुनाव कराने की अनुशंसा की, उसकी मिसाल भाजपा के इतिहास में दूसरी नहीं है। सच तो यह है कि गोआ में विजय भाजपा की कम और पर्रीकर की व्यक्तिगत विजय अधिक है।

गोआ की विजय से प्रसन्न हो रहे मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के भाजपाई यह भूल जाते हैं कि उनके पास मनोहर पर्रीकर का कोई पर्याय नहीं है। हाँ, उनके पास ऐसे लोगों की भीड़ है जिनकी शैक्षणिक योग्यता पूछना उनका अपमान करना होता है। सुंदरलाल पटवा, जिन्हें भाजपाई श्रद्धेय कहते नहीं थकते, के बारे में सुनते हैं कि वे ग्यारहवीं में अनुत्तीर्ण हो गये थे और फिर आगे नहीं पढ़े। जब सुंदरलाल पटवा मुख्यमंत्री थे तो भाजपाई कहते थे कि मुख्यमंत्री के नजदीकी वे ही बन सकते हैं जो ग्यारहवीं में फेल हुए हों। भाजपा में मुख्यमंत्री पद का स्वप्न देख रही एक साध्वी भी हैं जो हाईस्कूल तो क्या माध्यमिक स्कूल तक भी नहीं पहुँची। ओजस्वी भाषण, चुटीले अंदाज, लच्छेदार शैली के धनी इन नेताओं को कोई भी न तो विद्वान मानता है, न प्रशासक, न विचारक। खोखली बातों की चाशनी परोसने वाले इसी श्रेणी के नेताओं की मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ भाजपा में कोई कमी नहीं है। पर नेताओं की भीड़ में एक भी ऐसा नेता नहीं दिखता है जो शैक्षणिक योग्यता में, ऊर्जा में, गतिशीलता में, व्यवहारकुशलता में, विद्वता में, प्रतिभा में दिग्विजय सिंह के समतुल्य हो।

अपनी इस कमी को ढकने के लिए भाजपा सामूहिक नेतृत्व का सहारा ले रही है। या तो भाजपा इस शाश्वत सत्य को भूल गयी है कि सौ हिरण मिलकर भी एक शेर का मुकाबला नहीं कर सकते। या


© All Rights Free

फिर भाजपा की कूटनीतिक योजना यह हो कि चुनावपश्चात सुयोग्य, सक्षम व्यक्ति प्रस्तुत करने का वायदा कर चुनाव जीत लिया जाए। चुनाव जीतने के बाद तो उत्तरप्रदेश की तर्ज पर जादुई पिटारे में से खोद कर रामप्रकाश गुप्त जैसे किसी भी पुरातत्वावशेष को निकाल सिहांसन पर स्थापित किया जा सकता है। भाजपा के पास पिछली सदी के पूर्वार्द्ध के माडलों की कोई कमी नहीं है। हर माडल गंभीरता का लबादा ओढ़े, अपने दंतविहीन मुख में नकली बतीसी लगा तथा श्वेत केशों में खिजाब लगाकर वरिष्ठता उद्घोषित करने की दौड़ में सर्वश्रेष्ठ है। इनमें से प्रत्येक सत्तासुख के दिवास्वप्नों में खोया है। पर जनता क्षमताविहीन अयोग्य वरिष्ठों की जमात को सत्ता सौंपने को कतई तैयार नहीं है।

जनता अत्यन्त बुद्धिमान है। वह क्षमताओं तथा योग्यताओं का आकलन करना बखूबी जानती है। आप अपनी टीम तथा कैप्टन को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करें। जनता विवेकपूर्ण निर्णय लेगी। जो टीम आपसी झगड़ों के कारण खेल प्रारंभ होने के पूर्व अपना कैप्टन घोषित करने में असमर्थ हो, उस टीम पर कौन दाँव लगाना चाहेगा। शायद, कुछ जुआरी अपनी आदत से मजबूर हो दाँव लगाएँ। पर जनता जुआ नहीं खेलना चाहती। खास कर ऐसी पार्टी के पक्ष में जिसमे प्रतिभा एवं योग्यता ढूँढने के लिए दिए की नहीं सर्चलाइट की आवश्यकता पड़ती हो।

सच तो यह है कि भाजपा की मध्यप्रदेश (विभाजनपूर्व) इकाई को पितृपुरुष के रूप में जो वटवृक्ष प्राप्त हुआ, उसके तले प्रतिभा एवं योग्यता का कभी कोई स्थान नहीं रहा। अपवादों को छोड़, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में आज भाजपा केवल उन लोगों का क्लब बन कर रह गई है जो अटैची उठाना जानते हैं, पैर छूना और दबाना जानते हैं, नारे लगाते हैं, चाटुकारिता करते हैं तथा षड़यंत्र करते हैं। इस समूह में सिद्धांतों तथा विचारधारा की तोतारटन्त तो है पर समझ नहीं है। इक्का–दुक्का को छोड़ भाजपा के प्रदेशस्तरीय नेताओं में से अधिकतर पार्टी के मूल सिद्धांत एकात्म मानववाद की सही व्याख्या नहीं कर सकते। वे उन सिद्धांतों को भी नहीं समझते जिनका वे राग अलापते हैं। ऐसे व्यक्तियों से उन सिद्धांतों के आधार पर सरकारी तंत्र को सुचारू रूप से चलाने की आशा करना निरर्थक है।

बैठकों, सम्मेलनों, अधिवेशनों तथा कार्यक्रमों के कर्मकाण्ड में डूबी भाजपा को यह समझना होगा कि राजनीति में परिवर्तन आ रहा है। सुशिक्षित, सुयोग्य, प्रतिभावान नेताओं की नयी पीढ़ी को जनता गले लगा रही है। आज जनता की अपेक्षा मानसिक तथा शारीरिक रूप से सक्षम नेता की है। थुलथुल शरीर वाले नेताओं को नकार जनता अजित जोगी तथा चन्द्रबाबू नायडू की चुस्त–दुरुस्त शैली की कायल हो रही है। जनता राजनैतिक दलों से ऊपर उठकर व्यक्ति की योग्यता देखने लगी है। उत्तरप्रदेश में यदि भाजपा रामप्रकाश गुप्ता के नेतृत्व में चुनाव लड़ी होती तो शायद भाजपा की हालत काँग्रेस से भी बुरी होती। दूसरी ओर यदि उत्तरप्रदेश में काँग्रेस को एक दिग्विजय सिंह मिल जाए तो काँग्रेस के दुर्दिन समाप्त हो सकते हैं। नेतृत्व की योग्यता से मिलने वाले परिणामों का उदाहरण ही गोआ है। कुछ वर्ष पूर्व तक गोआ में भाजपा दो–चार सीटों पर ही सिमटी रहती थी। उस नाममात्र के अस्तित्व से आगे बढ़कर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के पीछे पर्रीकर जैसे युवा सुशिक्षित नेताओं की टीम है।

भाजपा गोआ में पर्रीकर के उभरने के पीछे एक और सत्य भी है। वहाँ भाजपा का कोई इतिहास नहीं है। इसलिए न कोई प्राचीन अवशेष हैं न खंडहर। मध्यप्रदेश भाजपा के पास एक गौरवशाली अतीत है। वटवृक्षों और स्मारकों की छाया में नयी कोपल नहीं फूटती। अतीत की गौरवगाथाओं से आत्ममुग्ध और

उज्वल भविष्य के दिवास्वप्नों में खोये मध्यप्रदेश के भाजपा नेताओं के पास यदि मनोहर पर्रीकर जैसा कोई प्रतिभावान युवक आ जाए तो वे सामूहिक रूप से उसे अपमानित तथा प्रताड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगें।

प्रतिभा और योग्यता का अपमान एक अक्षम्य अपराध होता है। संभवतः भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में इसी अपराध की सजा भुगतने को विवश है। अब समय आ गया है कि भाजपा के कर्णधार अपने गिरबान में झाँककर अपना वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करें। अहं को त्याग कर अपनी कमजोरी, अक्षमता और अयोग्यता को स्वीकार कर स्वयं से अधिक सक्षम, योग्य तथा प्रतिभावान व्यक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करना सरल कार्य नहीं होता। त्याग एवं बलिदान के उपदेश देने वाले भाजपा नेताओं से समय की माँग है कि वे अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को तिरोहित कर पार्टी में सुयोग्य, सुशिक्षित, प्रतिभावान व्यक्तियों को सर्वोच्च स्थान प्रदान करें।

अनिल चावला

५ जून, २००२